ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBBIL04292
RNI REG. NO. UPBBIL/2014/66218 PP. NO. 111-113
ISSN NO.-2347-2944
Vol.-6, Issues-7 YEAR- 2016 (Extra)

राजस्थान कला परिदृश्यः– छापा कला के विशेष संदर्भ में

संजीव किशोर गौतम

एसोसिएट प्रोफेसर–ललित कला संकाय, कला एवं शिल्प महाविद्यालय, लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ (उ0प्र0), भारत

सारांश : *राजस्थान की ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक पृष्ठभूमि अत्यन्त गौरवशाली रही है। यहॉ की भौगोलिक विषमताओं का कला शैलियों और उपशैलियों की विविधताओं ने देश में ही नहीं अपितु विश्व में भी अपनी विशिष्ट विशेषताओं के कारण अपना महत्वपूर्ण स्थान बना रखा है। जहॉ एक ओर राजस्थान का इतिहास अपने बलिदान, जौहर एवं शौर्य की गाथाओं से भरा पड़ा है वहीं राजस्थान की कलात्मक छटा का विकास राजप्रसादों, हवेलियों, प्राचीन स्मारकों में समाया हुआ है। राजस्थान की ये विलक्षण क्षमतायें देश–विदेश के हजारों पर्यटकों को अपनी ओर आकर्षित करती है। राजस्थान की सांस्कृतिक छटा यहॉ के तीज त्यौहारों तथा मेलों में अपनी कलात्मकता एवं वैविध्यपूर्ण आभा के साथ चमक उठती है तो वहीं राजस्थान विश्व के मानचित्र में अपनी हस्तकलाओं के विभिन्न स्वरूपों के कारण अपना एक महत्वपूर्ण स्थान बनाये हुए है। भौगोलिक विषमताओं का यह रेतीला प्रदेश राजस्थान अपने प्राकृतिक और भौगोलिक परिवेश के सन्दर्भ में जहॉ दूर–दूर तक बालू के टीलों वाला शुष्क और मरू प्रदेश है, वहीं राजस्थान की माटी की गंध में है मस्ती और हवा में है संगीत।*

ASVS Society Reg. No. 561/2013-14

राजस्थान राज्य का पूर्ण गठन आजादी के नौ वर्षों के बाद उस समय पूरा हुआ जब नवम्बर 1956 को अजमेर का राजस्थान राज्य में विलय हुआ। राजस्थान अपने आप में एक ऐसा महत्वपूर्ण प्रदेश है जहॉ रेगिस्तानी, पठारी, मैदानी सभी तरह का भू–भाग मौजूद है।

इसका अधिकांश भाग रेतीली टीलों से घिरा हुआ है, वहीं अरावली पर्वत मालायें भी इस तरह फैली हुई हैं कि इस बढ़ते रेगिस्तान को रोक सकें। बांसवाड़, डूंगरपुर से लेकर झालाबाड़ जिले तक बहुत बड़ी भूमि सघन वनों से आच्छादित इसी प्रदेश में नजर आ जायेगी। भारत के समस्त राज्यों में राजस्थान का प्रमुख स्थान है। यह भारत की पश्चिमी सीमा का प्रहरी है। साथ ही इसे हम भारत का हृदय भी कह सकते हैं, क्योंकि यह भारत का गौरवपूर्ण इतिहास अपने वक्षस्थल में छिपाये हुए है।

स्वातन्त्योत्तर काल में आधुनिक कला की शुरूआत ने नये परिवेश से जुड़ने की पहल की और सम्भावनाओं के द्वारा खोले। सामंती शासक का माहौल होने से पारम्परिक चित्रकला का बोलबाला था और नये प्रयोग नये रंगों में चित्रफलकों पर उतरना सहज भी नहीं था। सन् 1950 ई0 के आसपास आधुनिक भावबोध की भाषा को अंकित किया जाने लगा। पारम्परिक चित्र शैली के अतिरिक्त नई भावभूमि तैयार होने लगी। यहॉ राजस्थान स्कूल ऑफ आर्ट्स एण्ड क्राट्स की स्थापना हुई और श्री शैलेन्द्रनाथ डे जैसे कलाकार के आगमन और बंगाल के पुर्नजागरण के प्रभाव से ही नवीन कला शिक्षण का आरम्भ हुआ और नींव पड़ी आधुनिक कला की जिसके अग्रणी कलाकार थे– रामगोपाल, विजयवर्गीय, कृपाल सिंह शेखावत, देवकीनन्दन शर्मा एवं द्वारका प्रसाद शर्मा। इन कला गुरूओं ने राजस्थान की पारम्परिक कला और बंगाल की वॉश तकनीक तथा नवीन कला रूपों को अपनी कला में स्थान देकर राजस्थान के कला परिदृश्य में नवजागरण का भी श्रीगणेश किया। राजस्थान के समसामयिक कला जगत में रामगोपाल विजयवर्गीय ऐसे वटवृक्ष के रूप में जाने जाते रहे हैं जिसकी शीतल छाया में राजस्थान की कला पोषित व पल्लवित हुई। राम गोपाल जी ने बंगाल, अजन्ता तथा राजस्थान की पारम्परिक कला शैलियों और पद्धतियों के सम्मिश्रण से अपनी नवीन कला शैली का निर्माण किया तथा इतिहास, पुराण, धर्म तथा प्राचीन साहित्यिक कृतियों के विषयों और पात्रों के साथ सामाजिक धर्म एवं सांस्कृतिक जीवन पर अनेकानेक चित्र बनाये।

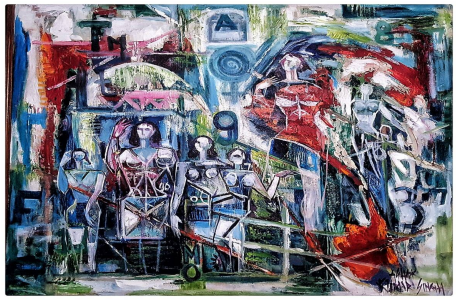

ISSN NO.-2347-2944
Vol.-6, Issues-7 YEAR- 2016 (Extra)

राजस्थान में चित्रकला का इतिहास तो काफी प्राचीन है परन्तु छापाकला का इतिहास मुख्य रूप से भारत की आजादी के काफी बाद ही दिखलाई पड़ती है। एक तरह से देखा जाये तो राजस्थानी कला में वह पुर्नजागरण का समय कहा जा सकता है जब वहॉ के समसामयिक कला के अग्रणी कलाकार विजयवर्गीय जी और कृपाल सिंह जी जैसे कलाकारों ने चित्रों की प्रारम्भिक परम्परा से हार कर अन्य माध्यम (ग्राफिक्स) में भी अपनी अभिव्यक्ति को व्यक्त किया।

राजस्थान कला आज जयपुर, मेवाड़, जोधपुर, बीकानेर, कोटा, बूँदी, किशनगढ़, अजमेर, पाली, मालपुरा, उनियारा आदि कई मुख्य शैलियों में विभक्त हो चुकी है और सहज ही अपनी कला शैली के कारण पहचानी जा सकती है। इसको सबसे पहले भारतीय कला के मनीषी कुमारस्वामी ने केवल राजपूत या जयपुर कला कहकर ही पुकारा था।

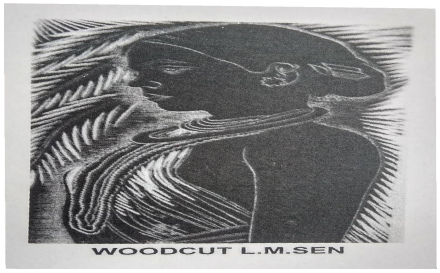

कला शिक्षा पहले या तो गुरूजनों की गद्दी पर ही संभव था या लगभग एक शताब्दी पूर्व स्थापित महाराजा स्कूल ऑफ आर्ट्स एण्ड क्राट से प्रारम्भ हुई। तत्कालीन महाराजा सवाई मान सिंह ने इसकी स्थापना मदरसे हुनरी के नाम से की थी जिसके प्रथम प्रिंसिपल मद्रास स्कूल ऑफ आर्ट्स के सी0एस0 वैलेन्टाइन बने। इनके साथ शिक्षकों का समूह भी मद्रास से आया। पर इस समय की कला हस्तकला तक ही सीमित थी। कालांतर में जब बंगाल का आन्दोलन प्रारम्भ हुआ तो यह प्रभाव यहॉ भी आया। असित कुमार हाल्दार के0के0 मुकर्जी, शैलेन्द्रनाथ डे एवं उनके शिष्य रामगोपाल विजयवर्गीय ने वॉश एवं टेम्परा में भारतीय कला का रूप उभारना प्रारम्भ कर दिया।

धीरे–धीरे विश्वविद्यालय एवं महाविद्यालय आदि में भी कला शिक्षा की आवश्यकता को समझा गया तथा राजस्थान विश्वविद्यालय के अन्तर्गत दयानन्द कालेज, अजमेर एवं वनस्थली तथा स्थानीय महारानी कालेज में स्नातक स्तर की कक्षा शिक्षा प्रारम्भ की गई। कुछ वर्षों से यहॉ अधिस्नातक कक्षायें भी चल रही हैं। एक नया विश्वविद्यालय उदयपुर में प्रारम्भ हुआ और वहॉ भी कला शिक्षा प्रारम्भ हो गयी। साथ ही अजमेर के सावित्री कालेज, बूँदी एवं कोटा कालेज, नाथद्वारा एवं बांसवाड़ा कालेज, जयपुर कनोड़िया एवं राजस्थान कालेज में भी कक्षा शिक्षा का क्रम निरन्तर चल रहा है। परन्तु ज्यादातर कालेजों में चित्रकला तक ही कला शिक्षा सीमित है। कुछ प्रमुख कालेजों में ग्राफिक्स की शिक्षा भी दी जाती रही है पर वह भी प्रारम्भिक स्तर का ही जिसमें मुख्य रूप से वुडकट एवं लिनोकट से संबधित छापाचित्र ही तैयार किये जाते रहे हैं। कालांतर में उदयपुर एवं जयपुर में छापाकला के आधुनिक तकनीकों पर बल दिया गया जिसमें कुछ कालेज एवं सेन्टर जोन के अलावा ललित कला अकादमी, जयपुर, जवाहर कला केन्द्र, जयपुर आदि स्थानों पर सरकार की मदद से ग्राफिक्स के विभिन्न तकनीकों से युक्त स्टूडियो की सुविधा उपलब्ध कराई गयी।

शिक्षा और सृजन के इस लम्बे इतिहास में जो नाम उभर कर आते हैं उनमें कुछ को ऐतिहासिक माना है, कुछ को वर्तमान कला आन्दोलन में सक्रिय भूमिका के रूप में जगह प्राप्त है।

उत्तरी भारत में कौन व्यक्ति ऐसा होगा जिसने नरोत्तम जी के कैलेण्डर न देखे हों। जब भी कोई आज के सन्दर्भों में स्थापित कलाकार उन्हें देखता है तो उसे अपना बचपन याद आये बिना नहीं रहता कि वह कब से इन कैलेण्डरों को देखा करता था? उसी प्रकार आज के बहुत से वरिष्ठ कलाकार भी कलाविद् रामगोपाल विजयवर्गीय के चित्रों को भूल नहीं पाये होंगे।

जहॉ तक राजस्थान में छापा कला का प्रश्न है तो पूर्णरूपेण छापाकार या छापाकला का ही सृजनकर्ता के रूप में कलाकारों की संख्या न के बराबर रही है परन्तु इस बात से भी नकारा नहीं जा सकता कि अनेक कलाकार राजस्थान में चित्र रचना के अलावा छापा चित्रण के विभिन्न माध्यमों में भी लगातार कार्यरत हैं और राष्ट्रीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर अपनी भागीदारी ग्राफिक्स चित्रों के माध्यम से ही करा पाने में सफल हुए हैं।

कृपाल सिंह शेखावत, राजस्थान के ऐसे ही कलाकार हैं जिन्होंने अनेकों माध्यम में अपने कला कौशल को दिखाया है एवं राजस्थान कला क्षेत्र को उजागर किया है। कृपाल सिंह ने अजन्ता तथा नन्द लाल बसु की कला शैली से प्रेरणा लिया

ASVS Society Reg. No. 561/2013-14

ISSN NO.-2347-2944
Vol.-6, Issues-7 YEAR- 2016 (Extra)

और चित्र के साथ–साथ छापाकला का व्यवहार काफी कुशलतापूर्वक अपने सृजन कार्य के लिए किया। इनकी रचना दृष्टि में परम्परा उनका अभीष्ट नहीं बल्कि एक साधन है। 1955–1958 की अवधि के दौरान दिल्ली में 'लाइफ ऑफ गॉधी जी' नामक म्यूरल पूरा किया तथा साथ ही वाश, टैम्परा, जलरंग और ग्राफिक्स माध्यमों में बहुत से रचनाओं का प्रतिपादन किया जो राष्ट्रीय स्तर पर पुरस्कृत और प्रशंसित हुए। इन्हीं कड़ी को आगे बढ़ाते हुए कलाकार सुरेश शर्मा है जिन्होंने ग्राफिक्स माध्यम और चित्र माध्यम (एक्रेलिक) दोनों में कुशलतापूर्वक कार्य किया है। आप मुख्यतः सपाट जमीन पर स्प्रे से दूसरे रंग द्वारा गहराई उत्पन्न करते हैं जो समकोण पट्टियों से और भी ज्यादा उभर जाता है। बिन्दु–बिन्दु द्वारा विभिन्न रंगों के कारण चित्र भी प्रिन्ट्स जैसा प्रतीत होने लगता है। लक्ष्मी वर्मा भी अच्छे चित्रकार के रूप में जाने जाते हैं, चाहे किसी भी आधार को लेकर उनमें मुख्यतः दो ही धारायें मूलतः देखी जा सकती हैं। वह कलाकार समूह जो राजस्थानी चित्र परम्परा में आगे नये प्रयोग करने में संलग्न है और जिन्होंने लगातार श्रम करके इस धारा को अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर मान्यता दिलाई है।

शैल चोयल इसी विधा में एक हस्ताक्षर हैं। इन्हें तैल रंग पर विषय की बारीकी और संयोजन की समझ में वहीं दक्षता प्राप्त है। उदयपुर का दृश्यचित्र, महल, अटारियां एक अजीब सा सुनापन (रंगीन) में कुछ आकृतियॉ सारे संयोजन को बैलेन्स करते मिलेंगी। ग्राफिक्स में यही आकार कुछ और टूट कर संयोजित होते हैं पर चित्र या ग्राफिक्स की मूल भावना लगभग वही मिलती है। छोटे से छोटे प्रिन्ट या बड़े से बड़े आकार के तैल चित्रों में वही तैयारी मिलेगी।

जो कलाकार अपनी रचना व क्षमता के लिए पहचाने जाते हैं उनमें विद्यासागर उपाध्याय, मोहन शर्मा एवं शब्बीर हसन काजी के नाम उल्लेखनीय हैं। दृश्यचित्र का आभास विद्यासागर उपाध्याय के कार्यों में मिलता है, देशज़ प्रभाव के साथ उनके छापा चित्रों में ज्यामितिय आकारों का संयोजन मानो इन्हें यदि स्याह सफेद ड्राइंग कहा जाय तो अधिक उपयुक्त होगा। आपके प्रिन्ट और चित्र दोनों में काले रंग का प्रभाव पूर्ण प्रयोग मिलता है जिनमें कहीं–कहीं विरलता तो कहीं एक अजीव सा डर छिपा होता है। उपाध्याय जी के छापा माध्यम चाहे वह लिनोकट हो या एचिंग सभी में रेखा का प्रभाव प्रमुख है। विभिन्न गोले में आकृतियॉ घूमती हुई सी प्रतीत होती हैं।

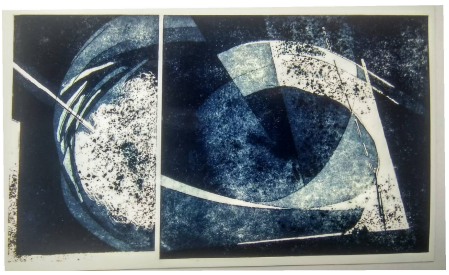

इसी प्रकार अशोक हजरा एवं सुश्री काजी, बसन्त कश्यप, राजेन्द्र कुमार शर्मा, कु0 पूर्णिमा अग्रवाल, रमेश गर्ग एवं सी0एम0 मिश्रा, प्रेमचन्द गोस्वामी, राधा बल्लभ गौतम, रणवीर सिंह चूड़ावाला अपने स्तर पर पूर्ण निष्ठा और लगन के साथ प्रयोगशील रहे हैं और अपनी रचना के लिए जाने जाते हैं। राजस्थान ललित कला अकादमी में कार्यरत विनय शर्मा छापाकारों में अपनी सेरीग्राफी छापा–चित्र के लिए जाने जाते हैं। आपके सेरीग्राफ तकनीक से बने छापों में अनेक उलझी रेखाओं का जाल–सा दिखाई पड़ता है। इनके अलावा उदयपुर में युगल किशोर शर्मा, शाहिद परवेज जैसे कलाकार हैं जिन्होंने अपने चित्रों के साथ छापा चित्रों में भी कई नये प्रयोग करते रहे हैं। युवा पीढ़ी के छापाकारों में मुकेश, दीपक, गौरीशंकर आदि का नाम प्रमुख रूप से लिया जा सकता है।

ASVS Society Reg. No. 561/2013-14

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. राजस्थान कल आज और कल– विश्वास कुमार, पृ0 सं0– 1
2. एन0के0 शर्मा, के0सी0 आचार्य, एन0क0 जैन, भारत की भौगोलिक एवं आर्थिक समस्या, पृ0 सं0– 295
3. राजस्थान की समसामयिक कला, रा0ल0क0अ0, पृष्ठ सं0– 82
4. राजस्थान का कला–दृश्य तथा कला–शिक्षा समकालीन – प्रथम संस्करण– पृ0 सं0– 67
5. राजस्थान का कला दृश्य तथा कला शिक्षा – सुमहेन्द्र समकालीन–प्रथम संस्करण– पृ0 सं0– 68
6. समकालीन कला– 20वीं शताब्दी के प्रारम्भ से उत्तर प्रदेश (1980) की कला प्रवृत्तियॉ– मदनलाल नागर – पृ0 सं0– 46
7. प्राचीन काष्ठ छापा कला – श्याम शर्मा, पृ0सं0– 63
8. समकालीन– प्रथम संस्करण, रा0ल0क0अ0 नई दिल्ली मदनलाल
9. समकालीन कला– प्रथम संस्करण– उत्तर प्रदेश में कला प्रशिक्षण– असद अली– रा0ल0क0अ0 नई दिल्ली, पृ0 सं0– 55
10. कला त्रैमासिक– छापाकला विशेषांक– डॉ. गौतम चटर्जी रा0ल0क0अ0उ0प्र0– अप्रैल से जून 2002, पृ0 सं0– 5,6

*****